	बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय **बाँदा – २१०००१ (उ0प्र0)** **Banda University of Agriculture & Technology, Banda- 210001 (U.P.)**
मौसम आधारित कृषि सलाह **(Agro-Weather Advisory Bulletin No.: 127/2025) Year: 7th**	
जिला: बाँदा	**जारी करने की तिथि: 2.04.2025 (1-15 April)**

सामान्य सलाह

ग्रीष्म ऋतु का आगाज हो चूका है। किसान भाई को कृषि कार्यों हेतु घर से बहार जाने की मजबूरी होगी । इस दशा में विशेष सावधानी वरतने की आवश्यकता होती है -

- अगर संभव हो तो दोपहर के समय अनावश्यक घर से बाहर नहीं जायें ।
- जाना आवश्यक होने पर अपने को पूरी तरह ढँक कर तथा पर्याप्त मात्रा में अपनें साथ पानी लेकर जायें ।
- यथासंभव सुबह और शाम के समय कृषि कार्य करें ताकि धुप से बचा जा सके।

क्रम सं	विभाग	सलाह
1-	शाक-भाजी	➢ संभावित अधिक तापमान के मद्देनजर कद्दू वर्गीय, बैगन, टमाटर, मिर्च तथा भिंडी की खड़ी फसलों में मृदा जल एवं खरपतवार प्रबंधन करें। ➢ ग्रीष्म ऋतु हेतु टमाटर, बैगन व मिर्च की रोपाई करें। ➢ प्याज व लहसुन फसलों में नमी प्रबंधन करें। ➢ भिंडीए चौलाई, कुल्फ़ा, लौकी, कद्दू, तरोई, खीरा, करेला, लोबिया की बुआई कर दें। ➢ मिर्चए टमाटर, मिर्च, लहसुन, गोभी वर्गीय सब्जियों में माहू आने की संभावना है अतः उपयुक्त कीटनाशी से पादप सुरक्षा करें। ➢ ग्रीष्म ऋतु की नव रोपित फसलों में मृदा नमी संरक्षणहेतु सूखी घास या पुआल का पलवार प्रयोग करें।
2-	शस्य-प्रबंधन एवं मृदा-प्रबंधन	शस्य.प्रबंधन आज के हालात में खेती तो वैज्ञानिक ढंग से ही करें वरना लाभ की जगह नुकसान मिल सकता है। वैज्ञानिक ढंग आपके सदियों से चले आ रहे तरीकों का सुधरा व लाभदायक रूप है जिससे उतनी ही भूमि में कम समय, मेहनत व लागत से ज्यादा उपज मिलती है। ➢ अप्रैल माह में ट्यूबवैल व नहर के पानी की जांच करवा लें ताकि पानी की गुणवत्ता का सुधार होता रहे व पैदावार ठीक हों। ➢ इस समय कुछ कमजोर खेतों में हरी खाद बनाने के लिए ढ़ैचा, लोबिया या मूग लगा दें तथा धान रोपने से १–२ दिन पहले मिट्टी में जुताई करके मिला दें इससे मिट्टी की सेहत सुधरती है। ➢ ग्रीष्मकालीन फसलों में सिंचाई का समुचित प्रवंधन करें । .

		➢ रबी की तैयार फसलों की समय से कटाई – मंड़ाई सुनिश्चित करें तथा सुरक्षित स्थान पर भण्डारण करें । ➢ फसल चक्र अपनाएं और एक ही फसल को लगातार न उगाएं। **मृदा.प्रबंधन** ➢ उद्यानिक फल वृक्षों में आवश्यकतानुसार सिंचाई उपरान्त पोषक तत्वों का प्रयोग करें। ➢ जो सब्जी फसलें अभी भी खेतों में है उनमें आवश्यकतानुसार पोषक तत्वों का प्रयोग करें। ➢ ग्रीष्मकालीन सब्जी फसलों की बुवाई/रोपाई में फास्फोरस एवं पोटाश का प्रयोग आधारीय उर्वरक के रूप में प्रयोग करें। एक तिहाई नत्रजन का भी प्रयोग करना उपयुक्त होगा। ➢ जिन खेतो से फसल कट गई है उन खेतो से मिट्टी परीक्षण हेतु मृदा नमूना एकत्र कर नजदीकी प्रयोगशाला में परीक्षण हेतु भेजें।
3-	**पशुपालन प्रबंधन**	➢ अप्रैल माह में उच्च तापमान की विशेषता होती है जिसके परिणाम स्वरूप पशुओं में निर्जलीकरण का प्रभाव पड़ता है जिससे शरीर में लवण की कमी, भूख में कमी व पशुओं के उत्पादन में गिरावट आदिभीआती है इसलिए उच्च तापमान से जानवरों की रक्षा करना अनिवार्य है। इसके लिए पशुओं को तेज धूप से बचावें व जानवरों को दोपहर के समय छायादार व हवादार स्थान पर ही बाँधें । इस मौसम में पशुओं की पानी की व्यवस्था पर भी उचित ध्यान दिया जाना चाहिए । स्वच्छ व ताजा पानी पशुओं को दिन में कम से कम चार बार पीने हेतु देना चाहिए। ➢ इस महीने के दौरान चारागाहों में चारे की उपलब्धता कम हो जाती है और मानसून की शुरुआत तक इसका प्रभाव पशुपोषण पर रहता है ऐसे समय में पशु शरीर में लवणों विशेष रूप से फास्फोरस की कमी होती है जिसके परिणामस्वरूप पशुओं में पीका (अपर्याप्त भूख) नामक बीमारी हो जाती है। जिससे बचाव हेतु पशुओं को खिलाये जाने वाले राशन में ५०–६० ग्राम खनिज मिश्रण अवश्य दें। गर्मियों में हरा चारा लेने हेतु गेहू की कटाई के उपरान्त ज्वार, मक्का व लोबिया की बुआई करें।
4–	**कीट-प्रबंधन**	➢ मूँग/उर्द/भिण्डी/लोबिया आदि में पीत शिरा मोजैक/पत्ती मरोड़ विषाणु रोग के वाहक कीट के नियंत्रण हेतु बुवाई पूर्व बीजोपचार इमिडाक्लोप्रिड 3 ग्रा0/किग्रा0 बीज की दर से करें। रस चूसने वाले कीटों (सफेद मक्खी एवं माहू) हेतु पीला चिपचिपा ट्रैप का प्रयोग करें।

		➢ कद्दू कुल की सब्जियों में कद्दू कुल के प्रमुख कीट लाल भृंग से बचाव हेतु फेनवेलरेट 0.4 प्रतिशत धूल की 20–25 किग्रा0 मात्रा का प्रति हे0 की दर से बुरकाव करें। ➢ आम में बौर निकलने पर बागों की बराबर देखभाल करें। भुनगा कीट व मिली बग की रोकथाम हेतु फ्लोनीकॉमिड 50 डब्ल्यू जी 4 ग्राम को 10 लीटर पानी अथवा बुप्रोफेजिन 25 प्रतिशत एस0सी0 2 मिली0 प्रति लीटर पानी में घोलकर आवश्यकतानुसार 10–15 दिन के अन्तराल पर 2–3 छिड़काव करें। ➢ दीमक प्रभावित क्षेत्रों में खेत में कच्चे गोबर का प्रयोग न करें, फसल अवशेषों को नष्ट कर बुवाई से पूर्व खेत में नीम की खली 10 कुन्टल प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें।
5–	**पादप रोग प्रबंधन**	बुंदेलखंड क्षेत्र में अप्रैल 2025 के दौरान किसानों को फसलों में होने रोगों से बचाव हेतु निम्नलिखित सलाह दी जाती है: **मूंग की फसल**: • **पीला मोजेक विषाणु रोग**: रोग की प्रारंभिक अवस्था में संक्रमित पौधों को उखाड़कर नष्ट करें। सफेद मक्खी के नियंत्रण के लिए इमिडाक्लोप्रीड 17.8 एसएल (0.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी) या ऐसीटामिप्रिड 20 एसपी (0.5 ग्राम प्रति लीटर पानी) या डायमिथोएट (2 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी) का छिड़काव करें। प्रति एकड़ खेत में 10 पीले चिपचिपे पाश लगाएं। • **चूर्णिल आसिता (पाउडरी मिल्ड्यू)**: सल्फर फफूंदनाशी (4 ग्राम प्रति लीटर पानी) या केराथेन (1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी) का छिड़काव करें। **कद्दूवर्गीय फसलें**: • **मृदुरोमिल आसिता (डाउनी मिल्ड्यू)**: रोग के लक्षण दिखते ही मेटालैक्सिल या रिडोमिल एम जेड (1 ग्राम प्रति लीटर पानी) का छिड़काव करें। **भिंडी की फसल**: • **पीत शीरा मोजेक रोग**: खेत में 10 पीले चिपचिपे पाश प्रति एकड़ लगाएं। रोग की प्रारंभिक अवस्था में संक्रमित पौधों को उखाड़कर नष्ट करें। सफेद मक्खी के नियंत्रण के लिए इमिडाक्लोप्रीड 17.8 एसएल (0.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी) या ऐसीटामिप्रिड 20 एसपी (0.5 ग्राम प्रति लीटर पानी) या डायमिथोएट (2 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी) का छिड़काव करें। **टमाटर की फसल**: • **पत्ती मुड़ने का वायरस (TLCV)**: यह वायरस टमाटर की फसल को प्रभावित करता है, जिससे पत्तियां सिकुड़ जाती हैं और उत्पादन कम हो जाता है। इसके नियंत्रण के लिए सफेद मक्खी, जो इस वायरस का वाहक है, का नियंत्रण आवश्यक है। इमिडाक्लोप्रीड 17.8 एसएल (0.5

		मिलीलीटर प्रति लीटर पानी) का छिड़काव करें और संक्रमित पौधों को तुरंत हटा दें। **अन्य सावधानियाँ:** • फसलों की नियमित निगरानी करें और रोग के प्रारंभिक लक्षणों पर तुरंत कार्रवाई करें। • संतुलित उर्वरक का उपयोग करें और अधिक नाइट्रोजन का प्रयोग न करें, क्योंकि यह रोगों को बढ़ावा दे सकता है। • फसल चक्र अपनाएं और एक ही फसल को लगातार न उगाएं। समय पर सही प्रबंधन अपनाकर किसान अपनी फसलों को रोगमुक्त रख सकते हैं और उत्पादन बढ़ा सकते हैं। ➢
6.	**बागवानी. प्रबंधन**	**नींबू:** ➢ नींबू में एक वर्ष के पौधे के लिए दो किग्रा. कम्पोस्ट और 70 ग्राम यूरिया प्रति पौधा दें। अप्रैल में नीबू का सिल्ला, लीफ माइनर और सफेद मक्खी के नियंत्रण के लिए इमिडाक्लोप्रिड 0.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। ➢ तने व फलों का गलना रोग के लिए बोडों मिश्रण का छिड़काव करें। ➢ जस्ते की कमी के लिए तीन किग्रा जिंक सल्फेट को 1.7 किग्रा. बुझा हुआ चून के साथ 500 लीटर में घोलकर छिड़कें। ➢ नींबू प्रजातियो में फल बनने के तुरन्त बाद सिंचाई करनी चाहिए तथा नये पौधों में देषी फुटान अवष्य हटायें । **बेरः** ➢ छोटे व नये पौधों की सिंचाई करावें पैबन्धी चष्मा हेतु देषी बेर के पौधों की कटाई–छटाई करावें। देषी फुटान हटावें। बागों में सिंचाई रोक देवें। **आमः** ➢ फलों को गिरने से बचाने के लिए यूरिया के दो प्रतिशत घोल से पेड़ पर छिडकाव करें। ➢ प्रथम पखवाड़े में सिंचाई अवश्य दे। छोटे पौधों के बीच की भूमि की जुताई करें फलों को गिरने से रोकने के लिए मध्य अप्रैल में 2,4–डी, 2 ग्राम प्रति 100 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें। ➢ आम के गुम्मा रोग (मालफारमेशन) से ग्रस्त पुष्प मंजरियों को काट कर जला या गहरे गढ्ढे में दबा दें. आम के फलों को गिरने से बचाने के लिए एल्फा नेफ्थलीन एसिटिक एसिड 4.5 एस.एल. के 20 मिली को प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें. ➢ मीलीबग नई कोपलों, फूलों व फलों का रस चूसकर काफी नुकसान करती है। नियंत्रण के लिए इमिडाक्लोप्रिड 0.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें तथा नीचे गिरी या पेड़ों पर चढ़ रह कीड़ों को इकट्ठा करके जला दें और घास साफ रखें। **अमरूदः** ➢ अप्रैल में सिंचाई न करें, फूलों को तोड़ दें ताकि फल मक्खी फूलों में अण्डे न दें पाये, जिससे फल सड़ जाते हैं। अमरूद की सिर्फ शरदकालीन फसल ही लेनी चाहिए। **पपीताः**

		➢ अप्रैल मे पपीते की नर्सरी लगाने के लिए 70 वर्ग मीटर में 170 बीज को 6×6 इंच की दूरी और एक इंच गहरा लगाएं। उन्नत किस्मों में सनराइज, हनीड्यु, पूसा डिलीशियस, पूसा ड्वार्फ व पूसा जांयट हैं। एक नर्सरी में एक कुंतल खाद मिलाकर बेड तैयार करें और बीज को एक ग्राम कैपटोन से उपचारित करें। ➢
7.	**वानिकी प्रबंधन**	➢ गर्म मौसम को ध्यान में रखते हुए वानिकी पौधशाला के नर्सरी पौध की सुरक्षा एवं समुचित विकास हेतु क्रमशः छाया की उचित व्यवस्था तथा सायंकाल नर्सरी में नियमित सिंचाई करने की सलाह दी जाती है। ➢ किसानों को कृषि वानिकी के तहत वृक्षारोपण की योजना तैयार करने की सलाह दी जाती है जैसे उद्देश्य के अनुसार वृक्ष प्रजातियों का चयन, स्थान, रोपण दूरी, गड्ढे तैयार करना इत्यादि। ➢ किसानों को सलाह दी जाती है कि वे पौधारोपण/वृक्षारोपण से पूर्व 30x30x30 cm आकार के गड्ढे तैयार कर लें। ➢ चारे की आवश्यकता को पूरा करने के लिए, किसान खेत की सीमा के किनारे वृक्षारोपण की योजना बना सकते हैं। ➢ किसान भाई जो चिरौंजी/चार (बुचनेनिया लैनजन) पौधशाला में रुचि रखते हैं, तो यह इसके संग्रह का सबसे अच्छा समय है क्योंकि वनक्षेत्र में चिरौंजी परिपक्व हो रही हैं। अतः चिरौंजी/चार के संग्रह हेतु उचित योजना एवं व्यवस्था बनायें।

वैज्ञानिक सलाहकार मंडल–

1. डॉ जी. एस. पंवार 2. डॉ दिनेश साह 3. डॉ ए.सी. मिश्रा 4. डॉ ए.के. श्रीवास्तव 5. डॉ राकेश पाण्डेय डॉ मयंक दुबे	6. डॉ दिनेश गुप्ता 7. डॉ पंकज कुमार ओझा 8. डॉ सुभाष चंद्र सिंह 9. डॉ जगन्नाथ पाठक 10. डॉ धर्मेन्द्र कुमार